بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 02.09.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में अरब देश से बाहर के दुष्टता दिखाने वाले विरोधियों के साथ होने वाले युद्धों का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज, बयान फ़र्मूदा 02 सितम्बर 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में होने वाले युद्धों का वर्णन हो रहा था। इसके अंतर्गत दमिश्क़ पर विजय, जो तेरह हिजरी में हुई, उसके बारे में कुछ विस्तार से बयान करता हूँ। यह अन्तिम युद्ध था जो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में हुआ।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने शाम देश की ओर विभिन्न सेनाएँ रवाना फ़रमाईं। हज़रत अबू उबैदा रज़ी. को एक सेना का अमीर बनाकर दमिश्क़ के निकट शाम के एक पुराने, प्रसिद्ध तथा बड़े नगर हिम्स पहुंचने का आदेश दिया। हज़रत अबू बकर रज़ी. के निर्देश पर हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद ने दमिश्क़ पहुंच कर दूसरी इस्लामी सेना के साथ मिलकर उसका घेराव कर लिया तथा इस पर बीस दिन की अवधि बीत गई किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। इसी बीच मुसलमानों को सूचना मिली कि हरक़ुल राजा ने अजनादैन नामक स्थान पर रोमियों की विशाल सेना एकत्र कर ली। यह सूचना मिलते ही हज़रत ख़ालिद रज़ी. बाब शर्क़ी नामक स्थान से निकल कर बाब जाबियः नामक स्थान पर हज़रत अबू उबैदा रज़ी. के पास आए तथा स्थिति स अवगत कराते हुए अपना सुझाव पेश किया कि हम दमिश्क़ का घेराव छोड़ कर अजनादैन में रोमी सेना से निमट लें और यदि अल्लाह ने हमें विजय प्रदान की तो फिर यहाँ वापस लौट आएँगे। हज़रत अबू उबैदा रज़ी. ने कहा कि मेरा सुझाव इसके विपरीत है। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने हज़रत अबू उबैदा रज़ी. के सुझाव पर सहमति जताई तथा क़िले का घेराव जारी रखा। इस तरह घेरा बन्दी पर इक्कीस दिन बीत गए, हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने मुसलमानों को घोर आक्रमण करने की प्रेरणा देते हुए स्वयं बाब शर्क़ी से निरन्तर हमले शुरु किए, इसी तरह युद्ध में व्यस्त थे, देखा कि दीवार पर जो रोमी थे वे सहसा तालियाँ बजाकर नाचना कूदना तथा ख़ुशी व्यक्त कर रहे हैं। मुसलमान आश्चर्य चकित होकर उनको देखने लगे। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने एक ओर देखा तो एक बड़ा ग़ुबार (धूल भरी हवा) उस ओर उठता दिखाई दिया जिसके कारण आकाश अंधकारमय तथा दिन के समय ही अंधेरा छाया हुआ दिखाई देता था। आप रज़ी. तुरन्त समझ गए कि दमिश्क़ वालों की सहायता के लिए हरक़ल बादशाह की सेना आ रही है।

हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने तुरन्त हज़रत अबू उबैदा रज़ी. को अवगत कराते हुए कहा कि मैंने यह निश्चय किया है कि पूरी सेना लेकर हरक़ुल राजा के भेजे हुए लशकर से मुक़ाबले के लिए जाऊँ, अतः इस विषय मे आप रज़ी. का सुझाव क्या है? हज़रत अबू उबैदा रज़ी. ने फ़रमाया कि यह उचित नहीं है क्यूँकि यदि हमने इस स्थान को छोड़ दिया तो क़िले के लोग बाहर आकर युद्ध करेंगे और हम रोमियों की दो सेनाओं के बीच कठिनाई में फंस जाएंगे। इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ी. के और अधिक सुझाव मांगने पर आप रज़ी. ने फ़रमाया- तुम एक दलेर एवं बहादुर व्यक्ति का चुनाव करो तथा उसके साथ एक जमाअत को दुश्मन के मुक़ाबले के लिए रवाना करो, अतः आप रज़ी. ने हज़रत ज़रार रज़ो. बिन अज़वर को पाँच सौ सवारों की एक सेना देकर रोमी सेना के मुक़ाबले के लिए रवाना किया। एक अन्य रिवायत में सेना की संख्या पाँच हज़ार बयान हुई है।

मुसलमानों ने बहादुरी से रोम की सेना पर निरन्तर वार किए, रोमी सेनापति के बटे ने हज़रत ज़रार रज़ी. पर हमला किया और आप रज़ी. के बाएँ बाजू पर भाला मारा जिसके कारण ख़ून तेज़ी से बहने लगा, परन्तु एक पल बाद ही आप रज़ी. ने उसके दिल पर भाला मार कर उसका वध कर दिया, भाला उसकी छाती में फंस गया और उसका फल टूट गया। रोमी सेना ने भाले को ख़ाली देखा तो आप रज़ी. की ओर टूट पड़े तथा आप रज़ी. को क़ैद कर लिया। जब यह ख़बर हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को पहुंची तो बड़े परेशान हुए तथा साथियों से रोमी सेना के विषय में सूचना लेकर हज़रत अबू उबैदा रज़ी. से विचार विमर्श किया। उन्होंने फ़रमाया- दमिश्क़ के घेराव का उचित प्रबन्ध करके आप रज़ी. हमला कर सकते हैं।

इसी बीच सेना के आगे आगे लाल रंग के घोड़ पर सवार कवच के ऊपर लिबास पहने हुए एक अज्ञात घुड़सवार व्यक्ति को देखा गया जिसके रख रखाव से दलेरी, बुद्धि सम्पन्नता तथा युद्ध कौशल प्रकट होता था। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने इच्छा जताई कि काश, मुझे पता चल जाए कि यह घुड़सवार कौन है? इस्लामी सेना जब काफ़िरों के निकट पहुंची तो उसने उन पर ऐसी बहादुरी से हमला किया कि जिस प्रकार बाज़ पक्षी चिड़ियों पर झपटता है तथा उसके एक हमले ने ही शत्रु की सेना में हलचल मचा दी तथा हत्याओं के ढेर लगा दिए। हज़रत ख़ालिद रज़ी. के अनुरोध तथा पूछने पर उसने निवेदन पूर्वक कहा कि मैं ज़रार की बहन ख़ौला रज़ी. सुपुत्री अज़वर हूँ, भाई की गिरफ़तारी का पता चला तो मैंने वही किया जो आप रज़ी. ने देखा।

हज़रत ख़ालिद रज़ी. के भरपूर हमले के परिणाम स्वरूप रोमियों के पैर उखड़ गए तथा उनकी सेना बिखर गई। बहादुरी के जौहर दिखाने वाले हज़रत राफ़े रज़ी. को हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने इरशाद फ़रमाया कि तुम रास्तों को जानते हो, अपनी इच्छानुसार जवानों को लेकर हिम्स पहुंचने से पहले हज़रत ज़रार रज़ी. को छुड़वाओ और अपने रब के हाँ बदला पाओ। वे जाने ही वाले थे कि हज़रत ख़ौला रज़ी. ने भी मिन्नत समाजत करके साथ जाने की अनुमति प्राप्त कर ली, तत्पश्चात हमले के परिणाम में हज़रत ज़रार रज़ी. को अल्लाह ने रिहाई दिलाई।

दूसरी ओर इस्लामी सेना दमिश्क़ में रुकी हुई थी तथा क़िले का घेराव जारी था कि बसरा से हज़रत अबाद बिन सईद रज़ी. हज़रत ख़ालिद रज़ी. के पास आए और सूचना दी कि रोमियों के नव्वे हज़ार की सेना अजनादैन के स्थान पर जमा हुई है। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने हज़रत अबू उबैदा रज़ी. से विचार विमर्श

किया तो उन्होंने कहा कि हमारी सेना शाम देश में विभिन्न स्थानों पर बिखरी हुई है अतः उन समस्त सेनाओं को पत्र लिख दो कि वे हमें अजनादैन में आ मिलें और हम भी अब दमिश्क़ के क़िले का घेराव छोड़ कर अजनादैन की ओर कूच करें। इधर मुसलमानों को सेना ने कूच किया तथा उधर दमिश्क़ वाले हरक़ुल के अत्यंत विश्वस्त तथा उच्च कोटि के तीर चलाने वाले बोलस नामक एक व्यक्ति के पास जमा हो गए। वह उस समय तक किसी भी युद्ध में सहाबियों के सामने नहीं आया था, उसको अपना अमीर बना लिया तथा हर प्रकार का लालच देकर युद्ध करने के लिए तय्यार किया, वह बड़ी तेज़ी से छः हज़ार सवार तथा दस हज़ार पैदल सेना लेकर मुसलमानों के साथ मुक़ाबले के लिए निकल गया। हज़रत अबू उबैदा रज़ी. बोलस के साथ युद्ध में व्यस्त थे कि इतने में भिन्न भिन्न क्षेत्रों से आने वाले मुसलमानों की सेनाओं ने ऐसा हमला किया कि दमिश्क़ से आकर हमला करने वाले रोमियों को अपने अपमान का विश्वास हो गया। हज़रत ज़रार रज़ी. आग के अंगारे की भांति बोलस की ओर बढ़े, उसने जब आप रज़ी. को देखा तो पहचान कर कांप उठा तथा पैदल भाग खड़ा हुआ। आप रज़ी. ने उसका पीछा किया तथा जीवित पकड़ कर बन्दी बना लिया। इस युद्ध में काफ़िरों के छः हज़ार आदमियों में मुशकिल से सौ आदमी जीवित बचे। दूसरी ओर बोलस का भाई बुतरस पैदल सेना के साथ महिलाओं की ओर बढ़ा तथा कुछ महिलाएँ गिरफ़तार करके दमिश्क़ की ओर वापस पलटा। हज़रत ज़रार रज़ी. हज़रत ख़ौला रज़ी. की क़ैद पर परेशान थे, जिस पर हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने आप रज़ी. को सांत्वना दी तथा दो हज़ार सिपाहियों को अपने साथ लिया तथा शेष समस्त सेनाओं को हज़रत अबू उबैदा रज़ी. के हवाले कर दिया ताकि महिलाओं की रक्षा हो जाए तथा स्वयं भी बन्दी महिलाओं की खोज में निकल गए।

जब महिलाओं को क़ैद की जाने वाली जगह पर पहुंचे तो देखा वहाँ धूल उड़ रही है। आप रज़ी. को आश्चर्य हुआ कि यहाँ लड़ाई क्यूँ हो रही है? पता करन पर ज्ञात हुआ कि बुतरस महिलाओं को बन्दी बनाकर नदी के पास अपने भाई बोलस की प्रतीक्षा में रुक गया था तथा अब वे महिलाओं को आपस में बाँटने लगे थे। इन महिलाओं में से अधिकांश बहादुर, अनुभवी, घुड़सवारी में निपुण तथा हर प्रकार के युद्ध कौशल जानती थीं। ये आपस में जमा हुईं और हज़रत ख़ौला रज़ी. ने उन्हें सम्बोधित करते हुए जोश दिलाया तथा स्वाभिमान को बढ़ाया तथा खम्बों की सहायता से ज़ंजीरों की कड़ियों की भांति शत्रु पर हमला किया। रोमी इन महिलाओं का साहस एवं बहादुरी देख कर चकित रह गए। दुश्मन ने दोबारा तय्यारी की किन्तु आरम्भिक हमले से पहले ही मुसलमान हज़रत ख़ालिद रज़ी. के नेतृत्व में वहाँ पहुंच गए। जब बुतरस ने मुसलमानों को देखा तो घबरा कर भागने लगा। हज़रत ज़रार रज़ी. ने भाले के भरपूर वार से उसको ढेर कर दिया। इसी तरह बोलस भी अपने भाई की अन्त दशा सुन कर अपनी इच्छानुसार हज़रत ख़ालिद रज़ी. के हाथों मारा गया।

अजनादैन की विजय के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने इस्लामी सेना को दमिश्क़ की ओर पुनः कूच करने का आदेश दिया। दमिश्क़ वालों को अजनादैन में रोमी सेना की पराजय की सूचना पहले ही मिल चुकी थी, परन्तु इस्लामी सेना के दमिश्क़ आने की सूचना सुन कर वे बड घबराए। दमिश्क़ के आस पास बसने वाले लोग भाग कर क़िले में छिप गए, अत्यधिक मात्रा में अनाज तथा अन्य उपयोगी वस्तुएँ जाम कर लीं तथा इनके अतिरिक्त हथ्यिार तथा अस्त्र शस्त्र भी एकत्र कर लिए ताकि घेराव करने वालों पर हमला

किया जा सके। इस्लामी सेना ने दमिश्क़ के निकट पड़ाव किया फिर आगे बढ़ कर क़िले का घेराव कर लिया। दमिश्क़ के धनवान तथा बुद्धिजीवी लोगों ने अपने शासक तौमा (महान हरक़ुल के दामाद) के माध्यम से हरक़ुल से सहायता मांगने अथवा मुसलमानों से सन्धि करने का सुझाव दिया किन्तु उसने अहंकार तथा घमंड दिखाते हुए मुसलमानों पर घोर हमला करने का आदेश दिया। इन हमलों में कई मुसलमान ज़ख़्मी तथा शहीद हुए, उन्हीं में से हज़रत अबान रज़ी. बिन सईद भी थे जिनकी नई नवेली पतनी हज़रत उम्मे अबान रज़ी. अत्यंत सुदृढ़ संकल्प एवं निश्चय से घोर युद्ध लड़ती रहीं तथा अपने तीरों के द्वारा कई रोमियों को मौत की घाट उतार दिया, इसी तरह आप रज़ी. ने अवसर मिलते ही एक तीर से तौमा की आँख का निशाना लिया तथा सदैव के लिए उसे एक आँख से अंधा कर दिया जिसके कारण तौमा अपनी सेना सहित वापस क़िले में बन्द होने के लिए विवश हो गया।

मुसलमानों ने क़िले का घेराव कठोरता के साथ किए रखा यहाँ तक कि दमिश्क़ वालों को विश्वास हो गया कि उनको सहायता नहीं पहुंच सकती तो उनमें कमज़ोरी और कायरता पैदा हो गई तथा अधिक संघर्ष करना छोड़ दिया। मुसलमानों के दिलों में इनको दबा लेने की भावना बढ़ गई तथा घेराव लम्बा होता चला गया। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने दमिश्क़ में दाख़िल होने का उपाय यह निकाला कि कुछ रस्सियों को जोड़ कर फ़सील (क़िल के चारों ओर की खाई) में उतरने तथा रस्सियों में फंदा लगा कर सीढ़ियों का काम लिया जाए। इसी उपाय को अपनाते हुए इस्लामी सेनाएँ दमिश्क़ में दाख़िल हो गईं। चारों इस्लामी अमीर नगर के बीच में एक दूसरे से मिले। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने यद्यपि दमिश्क़ का कुछ भाग लड़ कर विजय के रूप में प्राप्त किया था किन्तु चूँकि हज़रत अबू उबैदा रज़ी. ने सन्धि करना स्वीकार कर लिया था इस लिए विजय से प्राप्त क्षेत्र में भी सन्धि की शर्तें मान ली गईं।

हुज़ूर पुरनूर ने फ़रमाया- आगे इन्शाअल्लाह हज़रत अबू बकर रज़ी. के जीवन की जो शेष बातें हैं, वे बयान होंगी। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने अन्त में मुकर्रम अबू अरकूब साहब, जनूबी फ़लिस्तीन जामअत के पूर्व सदर, मठी के सबसे पहले अहमदी मुकर्रम शेख़ नासिर अहमद साहब ऑफ़ थर्पारकर सिंध पाकिस्तान, मुकर्रम मलक सुलतान अहमद साहब वक़्फ़े जदीद के पूर्व मुअल्लिम तथा मुकर्रम महबूब अहमद राजेकी साहब ऑफ़ सअदुल्लाहपुर ज़िला मंडी बहाउद्दीन पाकिस्तान का सविस्तार सद्वर्णन फ़रमाया तथा जुम्अतुल मुबारक की नमाज़ के बाद ग़ायब जनाज़ा पढ़ाने की घोषणा भी फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131